भय को; **बन्धम्**=बन्धन को; **मोक्षम्**=मोक्ष को; **च**=भी; **या**=जो; **वेत्ति**=जानती है; **बुद्धिः**=बुद्धि; **सा**=वह; **पार्थ**=हे अर्जुन; **सात्त्विकी**=सात्त्विकी है।

अनुवाद

हे अर्जुन! जो बुद्धि प्रवृत्ति और निवृत्ति, कर्तव्य और अकर्तव्य, भय और अभय, तथा बन्धन और मोक्ष को जानती है, वह सात्त्विकी है।।३०।।

तात्पर्य

शास्त्रविधि के अनुसार किए जाने वाले कर्म **प्रवृत्ति**, अर्थात् कर्तव्य के अन्तर्गत आते हैं। इसके विपरीत, अशास्त्रीय कर्मों से निवृत्त रहना चाहिए। जो शास्त्र-निर्देश को नहीं जानता, वही कर्मफल से बँधता है। इस प्रकार की विवेकवती बुद्धि सात्त्विकी है।

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी।।३१।।

यया=जिसके द्वारा; **धर्मम्**=धर्म को; **अधर्मम्**=अधर्म को; **च**=तथा; **कार्यम्**=कर्तव्य को; **च**=तथा; **अकार्यम्**=न करने योग्य कर्म को; **एव**=निःसन्देह; **च**=तथा; **अयथावत्**=भलीभाँति नहीं; **प्रजानाति**=जानता; **बुद्धिः**=बुद्धि; **सा**=वह; **पार्थ**=हे अर्जुन; **राजसी**=राजसी है।

अनुवाद

जो बुद्धि धर्म-अधर्म में और कर्तव्य-अकर्तव्य में भलीभाँति भेद नहीं कर सकती, वह राजसी है।।३१।।

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धि सा पार्थ तामसी।।३२।।

अधर्मम्=अधर्म को; **धर्मम्**=धर्म; **इति**=ऐसा; **या**=जो; **मन्यते**=मानती है; **तमसावृता**=मोह से ढकी हुई; **सर्वार्थान्**=सब अर्थों में; **विपरीतान्**=विपरीत; **च**=तथा; **बुद्धिः**=बुद्धि; **सा**=वह; **पार्थ**=हे अर्जुन; **तामसी**=तामस है।

अनुवाद

जो अंधकार और अज्ञान के वशीभूत हुई बुद्धि अधर्म को धर्म और धर्म को अधर्म समझती है और सदा विपरीत पथ में लगी रहती है, वह तामसी है।।३२।।

तात्पर्य

तामसी बुद्धि सदा विकृत रूप से कार्य करती है। वह अधर्म को धर्म समझती है और यथार्थ धर्म को अधर्म मानकर त्याग देती है। ऐसे मनुष्य की सम्पूर्ण विचारधारा और क्रियाएँ भ्रान्त हो जाती हैं। तामसी बुद्धि वाले साधारण मनुष्य को महात्मा और यथार्थ महात्मा को साधारण मनुष्य समझते हैं। इतना ही नहीं, सत्य को असत्य और असत्य को सत्य मानते हैं। सब क्रियाओं में वे विपथ ही ग्रहण करते हैं। इससे सिद्ध हो जाता है कि उनकी बुद्धि तामसी है।